धम्मपद की गाथाओं में बुद्धकालीन समाज

डॉ. आलोक भारद्वाज

असिस्टेंट प्रोफेसर, प्राचीन भारतीय इतिहास,
विद्यांत हिन्दू स्नातकोत्तर महाविद्यालय, लखनऊ

छठी शताब्दी ईसा पूर्व में भारत ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण विश्व धार्मिक रूप से आंदोलित था। यह काल धार्मिक और आध्यात्मिक चिंतन के साथ साथ सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टि से भी क्रांतिकारी युग था।[1] इस दौरान विश्व के अनेक भागों में महान चिंतकों, विचारकों और समाज सुधारकों का प्रादुर्भाव हुआ। इसी कालखंड में छठी शताब्दी ईसापूर्व के मध्य में भगवान बुद्ध का जन्म हुआ।

विश्व इतिहास में बुद्ध के समान कोई नहीं है। उन्होंने जीवन को, जैसा भी वह है उसी रूप में उसे स्वीकार किया और व्यवहारिक दृष्टि से जीवन से संबंधित प्रश्नों के उत्तर ढूंढे। उनके उपदेश साधारण मानव के लिए करुणा से ओतप्रोत थे। उनका चिंतन पाखण्ड से मुक्त और तर्क एवं बुद्धिवाद पर आधारित था। तथागत का संदेश जितना ऐतिहासिक दृष्टि से चिरंतन और तात्विक दृष्टि से सनातन है उतना ही वह इस समय प्रासंगिक है। वह विश्व शांति, अहिंसा, मैत्री, करुणा और सहिष्णुता का संदेश है।[2]

धम्मपद मूलतः बुद्धवाणी है। भगवान बुद्ध के मुख से समय–समय पर जो गाथाएं प्रस्फुटित होती रहीं, उन्हीं का उनके शिष्यों ने आगे चलकर धम्मपद के रूप में सुंदर संग्रह प्रस्तुत किया। तथागत की वाणी से चमत्कृत हो कर सुधी जन उनका अनुकरण करने लगे। जन सामान्य को उनके उपदेशों में दुःखों के सागर से पार लगाने की शक्ति प्रतीत हुई। भगवान बुद्ध ने बुद्धत्व प्राप्ति से लेकर परिनिर्वाण तक पैंतालीस वर्षों के जीवन में समय–समय पर जो उपदेश दिए उनका महत्वपूर्ण अंश धम्मपद की गाथाओं में संकलित है। बौद्ध धर्म के मूल सिद्धांत सार रूप में धम्मपद में समाहित हैं।

यह सत्य है कि धम्मपद का मूल उद्देश्य मानव को जीवन की चुनौतियों से जीतने के लिये कल्याणकारी राह दिखाना था, फिर भी इसकी गाथाओं के माध्यम से हमें तत्कालीन समाज की झलक भी मिल जाती है। बुद्ध के समय के सामाजिक और सांस्कृतिक परिवेश पर धम्मपद की गाथायें भी प्रकाश डालती हैं। धम्मपद जैसे निवृत्तिपरक ग्रंथ जो ज्ञान, साधना और निर्वाण से संबंधित जिज्ञासाओं को शांत करने के लिए हैं, से यह अपेक्षा कभी नहीं की जा सकती कि वह तत्कालीन समाज का ब्योरेबार विवरण प्रस्तुत करेगा। सामाजिक जीवन के विविध पक्षों पर धम्मपद की गाथाएँ जो सूचनाएँ हम तक पहुँचाती हैं उन के माध्यम से बुद्धकालीन समाज की रूपरेखा प्रस्तुत करने का प्रयास इस लेख में किया है।

परिवार समाज की आधारशिला है। धम्मपद में पारिवारिक जीवन का क्रमबद्ध विवरण तो नहीं मिलता, फिर भी परोक्ष रूप से परिवारों के स्वरूप की जानकारी अवश्य मिलती है। ये परिवार छोटे–बड़े सभी प्रकार के होते थे। सामान्य रूप से एक परिवार में माता–पिता, भाई–बन्धु रहा करते थे।[3] माता–पिता के लिए भगवान् बुद्ध ने कहा है कि संसार में माता–पिता की सेवा करना परम् सुखदायक है।[4] एक गाथा में कहा गया है जिस कुल में धीर व्यक्ति होते हैं उसके सुखों में वृद्धि होती है।[5]

तत्कालीन समाज में प्रचलित संस्कारों अथवा वैसी अन्य संस्थाओं के कहीं भी विस्तृत विवरण धम्मपद में प्राप्त नहीं होते है। बुद्ध जन्म, मरण अथवा विवाह से सम्बन्धित अनेक संस्कारों अथवा प्रथाओं की व्यर्थता की ओर कुछ अस्पष्ट निर्देश अवश्य करते है। 'धम्मपद' में कुछ स्थल ऐसे अवश्य प्राप्त होते हैं जिनसे मृत्यु के उपरान्त शव–क्रिया किस प्रकार की जाती थी, इसकी थोड़ी बहुत जानकारी उपलब्ध होती है ।

ग्रन्थ में कायानुपश्यना का उपदेश करते हुए भगवान् बुद्ध ने भिक्षुओं को श्मशान में पड़े हुए मृतक शरीरों को देखकर अपने शरीर की वास्तविक स्थिति का ज्ञान प्राप्त करने का उपाय बतलाया है। भिक्षुओं को वे उपदेश देते हुए कहते हैं कि वे अर्थात् भिक्षु श्मशान में जाकर एक दिन, दो दिन अथवा तीन दिन के मृतकों को देखें, जो फूले हुए, नीले पड़े हुए, पीव भरे हुए, कौओं, गिद्धों, चीलों, कुत्तों और अनेक प्रकार के जीवों द्वारा खाये जाते हुए कुछ मांससहित और कुछ मांसरहित हड्डी कंकाल–वाले हैं। इस प्रकार मरे हुए शरीर को श्मशान में फैंकी गयी अपथ्य लौकी की भांति कुम्हलाए हुए मृत शरीर को देखकर भिक्षु को अपने शरीर की नश्वरता के सम्बन्ध में विचार करना चाहिए।[6]

धम्मपद में यद्यपि वर्णव्यवस्था का सैद्धान्तिक पक्ष प्रस्तुत नहीं किया गया है, तथापि उसकी गाथाओं से स्पष्ट है कि तत्कालीन सामाजिक व्यवस्था चार वर्णों और उससे सम्बद्ध अनेकानेक जातियों के रूप में ही थी। ब्राह्मण के लक्षणों की विवेचना के लिए एक पूरा अध्याय 'ब्राह्मणवग्गो' धम्मपद में मिलता है। हिन्दू धर्मशास्त्रों के अनुसार ब्राह्मणों के कार्य थे अध्ययन अध्यापन, यजन–याजन, दान और प्रतिग्रह। समूचे ब्राह्मण वर्ण की एक थोड़ी–सी संख्या ही इस आदर्श तक पहुँच पाती थी और अनेक ब्राह्मण कृषि, राजकार्य आदि में लगे थे। धम्मपद में हम पूरे एक अध्याय के अंतर्गत सच्चे ब्राह्मण के गुणों का वर्णन पाते हैं । बुद्ध ने जन्मना–जाति के सिद्धान्त को नकारा तथा गुण, कर्म और चरित्र को महत्त्व प्रदान करते हुए ही किसी व्यक्ति की श्रेष्ठता स्वीकार करने का उपदेश दिया।[7] बुद्ध ने उसी को सच्चा ब्राह्मण माना, जो तप, ब्रह्मचर्य, संयम और इन्द्रिय जैसे गुणों से युक्त हो।[8] धर्मसूत्रों में जैसे वैश्यों और शूद्रों के ब्राह्मण और क्षत्रियों की भाँति अलग–अलग वर्गों के रूप में उल्लेख मिलते हैं, उस रूप में शूद्रों का धम्मपद में कोई उल्लेख नहीं है। किन्तु साधारणतया धम्मपद' में ऐसी अनेक हीन जातियों का उल्लेख है जिन्हें कम्मकार अथवा वक्कस कहा गया है और जिन्हें शूद्र वर्ण का ही समझा जाता है।[9] वस्तुतः विभिन्न शिल्पगत कार्यों को करने वाले अनेक लोग शूद्र के ही अन्तर्गत ग्रहण किये गये थे। हथौड़े, कुल्हाड़ी, तक्षणी आदि बनाने वाले लोहार और बढ़ई इसी वर्ग के सदस्य थे। ऐसे ही तकनीकी कार्य करने वालों का भिन्न–भिन्न समूह थे जो अपने पारम्परिक पेशे को अपनाते थे। ऐसी अनेक शूद्र जातियाँ थीं जो अपने पेशे के कारण विख्यात थीं।

बौद्ध–साहित्य में खाद्य सामग्री या भोजन को खादनीय या भोजनीय कहा गया है।[10] भोज्य पदार्थों में दूध और दूध से बने अनेक द्रवों का प्रयोग होता था। दूध, दही, मट्ठा, मक्खन और घी इनमें प्रमुख थे। दूध में चावल डालकर खीर बनाना बहुत प्रचलित था। धम्मपद में दूध से दही जमाने का उल्लेख प्राप्त होता है।[11] उस समय दाल का प्रयोग किया जाता था, मगर वह दाल किस चीज को है इस बात का स्पष्ट उल्लेख नहीं है।[12] भोजन और पेय को मीठा करने वाले तत्त्वों में ईख का रस अथवा उस रस से बनाये हुए शक्कर या गुड़ का उल्लेख भी मिलता है।[13] बुद्ध ने अपने अनुयायी भिक्षुओं को गुड़ ग्रहण करने की आज्ञा दी थी।[14]

धम्मपद अट्ठकथा से तत्कालीन समाज में प्रचलित मादक पेयों की भी जानकारी प्राप्त होती है। इनका उपयोग प्रायः भोजों, त्योहारों और मेलों के अवसर पर किया जाता था, जब मित्र और परिचित आमन्त्रित होते थे।[15] किन्तु साधारणतया मद्यपान को अच्छी दृष्टि से नहीं देखा जाता था। शराब का व्यापार करना भी अनुचित माना गया है। भगवान बुद्ध ने भिक्षुओं को शराब पीने से मना किया था।[16]

धम्मपद से अलंकारों के विषय में कोई विशेष सूचना नहीं प्राप्त होती। हम केवल इतना ही अनुमान कर सकते हैं कि सम्भवतः उस समय समृद्ध–वर्ग की स्त्रियों में स्वर्णनिर्मित आभूषणों का ज्यादा प्रचलन था। धम्मपद से मणिकुण्डल का उल्लेख प्राप्त होता है, जो बड़े ही कलात्मक ढंग से बने होते थे।[17]

धम्मपद से तत्कालीन समाज में प्रचलित कुछ महत्त्वपूर्ण प्रसाधनों की भी जानकारी प्राप्त होती है। पुरुष और नारी दोनों ही विभिन्न प्रकार के प्रसाधनों का उपयोग करते थे, यद्यपि प्रमुखतः यह नारी के जीवन का ही अंग माना जाता था। प्रसाधन में फूलों और उनसे बनी मालाओं का महत्त्वपूर्ण स्थान था जो स्त्रियों द्वारा केश–विन्यास में प्रयुक्त होती थीं। केशों को स्निग्ध करने के लिए तेलों का प्रचलन था, जो सम्भवतः फूलों से ही निर्मित होते थे। फूलों से अनेक प्रकार के इत्र भी निकाले जाते थे । धम्मपद' में माला बनानेवाले कुशल व्यक्तियों की चर्चा है।[18] चन्दन, तगर, कमल और जूही आदि सुगन्धित चीजों का वर्णन धम्मपद में प्राप्त होता है। पेड़ों के मूल, फूलों, फलों और पत्तों के रस को निकालकर उनकी गन्ध से शरीर को सुगन्धित किया जाता था।[19]

लकड़ी का काम करने वाले बढ़ई कहलाते थे। इनका कार्य भवन निर्माण और कलात्मक वस्तुएँ बनाने से लेकर कृषि, वस्त्र, उद्योग से सम्बन्धित औजार, खिलोना आदि का निर्माण सभी कुछ था। इसके अतिरिक्त वे रथ, बैलगाड़ी आदि के अंग–प्रत्यंग का निर्माण करते थे। लकड़ी का कार्य करने वालों को धम्मपद में तच्छक या तच्छका कहा गया है।[20] श्रीमती टी. डब्ल्यू रीज डेविड्स के मत में ये रथकार अथवा यानकार ऐसी आदिवासी जातियाँ थीं जो वंशानुगत रूप में रथ निर्माण या लकड़ी का काम किया करती थीं।[21] कृषि कार्यों में प्रयुक्त होने वाले सभी औजार लोहे से ही बनते थे, जिन्हें बनाने वालों को लोहार या कुम्भकार कहते थे। बाण बनाने वाले लोगों को चापकार या उसुकार कहा जाता था।[22] ये विभिन्न क्रियाओं को सम्पन्न करने के बाद बाण बनाते थे। लोहे के बाण भी बनाये जाते थे। बाण बनाने वालों जिन्हें इषुकार या उसुकार कहा जाता था, बड़ी दक्षता से बाण बनाते थे। धम्मपद में उसुकार द्वारा बिल्कुल सीधा तीर बनाने की प्रशंसा की गयी है।[23] इस ग्रन्थ में जंग लगकर लोहे के नष्ट होने का उल्लेख भी प्राप्त होता है।[24]

सुवर्णकार और उसका अन्तेवासी कुशलतापूर्वक शुद्ध और अच्छी तरह से साफ किये गये सोने से ही किसी वस्तु का निर्माण कर अपनी योग्यता प्रदर्शित करते थे। धम्मपद की एक उपमा से ज्ञात होता है कि कम्मार (सुवर्णकार) बारी बारी से चांदी के मैल को साफ करता है।[25] यह सफाई सम्भवतः किसी अम्ल की सहायता से होती थी। वस्तु विनिमय के साथ–साथ उस समय सिक्कों का भी लेन–देन में प्रचलन था। धम्मपद में उस समय के प्रमुख सिक्के कार्षापण (रुपया) या कहापण का उल्लेख प्राप्त होता है।[26] यह निश्चित नहीं है कि उस समय कार्षापण का मूल्यांकन क्या था। धम्मपद का जो उद्धरण ऊपर दिया जा चुका है उसकी अट्ठकथा के अनुसार एक कहापण बीस मासे का होता था।[27] बुद्धघोष के अनुसार कहापण चाँदी का सिक्का होता था।[28] किन्तु बुद्धघोष की यह टीका बुद्ध के समय से लगभग एक हजार वर्षों बाद गुप्तकाल में लिखी गयी थी।

बौद्धधर्म में गुरुकुलों के समान ही गुरु–शिष्य परम्परा के निर्वाह की पूर्ण चेष्टा की गयी है। भगवान बुद्ध ने भिक्षुओं को उपदेश दिया कि वे अपने गुरुओं तथा गुरुतुल्य व्यक्तियों के प्रति व्यवहार में समुचित आदर, अनुराग एवं सत्कार दिखलावें । उपासकों को भी उपदेश दिये गये कि वे अपने माता–पिता, अग्रज तथा गुरु का सम्मान करें। इस प्रकार का वन्दन मन, वचन और काया का वह प्रशस्त व्यापार है जिससे पथ–प्रदर्शक गुरु एवं विशिष्ट साधनारत साधकों के प्रति श्रद्धा और आदर प्रकट किया जाता है। इसमें उन व्यक्तियों को प्रणाम किया जाता है जो साधना–पथ पर अपेक्षाकृत आगे बढ़े हुए हैं। वन्दन के सम्बन्ध में बुद्ध वचन है कि पुण्य की अभिलाषा करता हुआ व्यक्ति वर्ष भर जो कुछ यज्ञ वह वनलोक में करता है, उसका फल पुण्यात्माओं के अभिवादन के फल का चौथा भाग भी नहीं होता। अतः सरलवृत्ति महात्माओं को अभिवादन करना ही अधिक श्रेयस्कर है।[29] सदा वृद्धों की सेवा करने वाले और अभिवादनशील पुरुष को चार वस्तुएँ वृद्धि को प्राप्त होती है– आयु, सौन्दर्य, सुख तथा बल।[30] धम्मपद की यह गाथा किंचित् परिवर्तन के साथ मनुस्मृति में भी पाया जाता है। उसमें कहा गया है कि अभिवादनशील और वृद्धों की सेवा करनेवाले व्यक्ति की आयु, विद्या, कीर्ति और बल ये चारों बातें सदैव बढ़ती रहती है।[31]

बुद्धकालीन समाज में पशु भी सम्पत्ति के रूप में माने जाते थे। उनमें कुछ पशु यथा–हाथी, घोड़े युद्ध में भी उपयोगी थे। धम्मपद में हाथियों में महानाग तथा धनपालक नामक हाथी का उल्लेख मिलता है। जब कभी मदोन्मत्त हाथी बन्धन तोड़कर भाग जाता था तो महावत उसे अंकुश के द्वारा वश में किया करता था। हाथी और घोड़े पशुओं में श्रेष्ठ माने जाते थे। इसके अतिरिक्त खच्चर और सूअर का उल्लेख भी धम्मपद में मिलता है। ऐसा अनुमान किया जाता है कि सूअर शिकार के काम आते थे।[32]

समाज में देवी–देवताओं की पूजा प्रचलित ची। पालि–निकाय से ज्ञात होता है कि देवराज इन्द्र सर्वाधिक लोकप्रिय देवता थे। इनको पूजा करनेवालों की संख्या समाज में सबसे अधिक थी और ब्राह्मण धर्मावलम्बियों के समान बौद्ध भी इनको देवराज ही मानते थे। वे इनका उल्लेख विभिन्न नामों से करते है, जैसे शक, बासव, मघवा आदि । मघवा शब्द का उल्लेख धम्मपद में भी प्राप्त होता है।[33] लेकिन उनके धम्मपद से यह भी ज्ञात होता है कि तत्कालीन समाज में वृक्ष देवता, वनदेवी, चौत्य, पर्वत, कूप, यक्ष, गन्धर्व, नाग आदि की पूजा होती थी।[34] वृक्षों को देवता, अप्सरा, नाग, प्रेतात्मा आदि का निवास स्थान मानकर लोग अपनी अभिलाषाओं की पूर्ति के लिए वृक्षोपासना करते थे।

स्वर्ग–नरक का उल्लेख भी धम्मपद में देखने को मिलता है। भगवान के अनुसार पाप–कर्म करनेवाले नरक में तथा सन्मार्ग पर चलनेवाले स्वर्ग को जाते हैं।[35] दुष्कर्म करनेवाला इस लोक तथा परलोक दोनों में दुःखी होता है। अपने कर्मों की बुराई देखकर वह शोक करता है और नष्ट हो जाता है।[36] लेकिन पुण्य–कर्म करने वाला इस लोक तथा परलोक दोनों में प्रसन्न रहता है तथा अपने कर्मों की पवित्रता को देखकर वह सुखी रहता है।[37]

इस प्रकार उपरोक्त विवेचन के आधार पर धम्मपद से सामाजिक रचना का जो चित्र प्राप्त होता है, उसमें वर्णव्यवस्था के सैद्धान्तिक पक्ष का तो कोई समर्थन नहीं है, किन्तु व्यवहार में प्रचलित समाज के चार वर्णों और उन वर्गों के भीतर की अनेकानेक जातियों को स्वीकृति दी गयी है। वर्ण भी कर्मप्रधान ही थे, किन्तु उनमें धीरे–धीरे जन्मजात श्रेष्ठता एवं हीनता की भावना घर करती जा रही थी, जिसका कि पीछे तथागत विरोध करना पड़ा और कहना पड़ा कि व्यक्ति कर्म से ही नीच–ऊँच होता है, जन्म से नहीं । एक अलग वर्ण के रूप में धम्मपद में शूद्रों का

कोई उल्लेख तो नहीं है किन्तु अनेक पेशेवर और हीन जातियों के रूप में इनका उल्लेख मिलता है जिन्हें कम्मकर अथवा तच्छक कहा गया है। चाण्डाल, पुक्कुस और निषाद जैसी अन्य हीन जातियाँ भी थीं। इसके अतिरिक्त कुटुम्ब, परिवार, विवाह, खान–पान, वस्त्राभूषण और सामान्य प्रयोग की वस्तुओं और समाज में स्थापित विभिन्न साधनों का भी विवरण प्राप्त होता है। धम्मपद में ब्राह्मणों की यज्ञ–परम्परा के सम्बन्ध में भी सूचनाएँ मिलती है। साथ हो सामान्य लोगों के धार्मिक आचार– विचार, देवी–देवताओं आदि की भी चर्चाएँ हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. पाण्डेय, गोविन्दचन्द्र, स्टडीज इन दी ओरिजिन्स ऑफ़ बुद्धिज्म, पृ० 310
2. पांडे, गोविंद चन्द्र, बौद्ध धर्म के विकास का इतिहास की भूमिका
3. धम्मपद, गाथा–संख्या–43
4. वही, गाथा – संख्या – 332
5. वही, गाथा–संख्या– 193
6. वही, गाथा संख्या 147, 149, 150
7. अंगुत्तर निकाय, पंचकनिपात, द्वितीय पण्णासक, प्रथमवर्ग, सातवां सूत्र
8. धम्मपद, छब्बीसवाँ "ब्राह्मणवग्गो"; तुलनीय–सुतनिपात, वासेठसुत्त, पृ०165–171
9. 0 वही, गाथा – संख्या 80
10. देखिए, उपासक, सी.एस., डिक्शनरी ऑफ अर्ली बुद्धि स्टिक मोनास्टिक टर्म्स, पृ० 70
11. धम्मपद, गाथा–संख्या 71
12. वही, गाथा – संख्या 64,65
13. धम्मपद अट्ठकथा, बुद्धघोष, सम्पादित एच. सी. नार्मन और एल.एस. तैलंग, भाग 4, पृ० 199
14. फूड ऐण्ड ड्रिक्स इन ऐंश्येण्ट इण्डिया, ओमप्रकाश, पृ. 60–71
15. धम्मपद अट्ठकथा, बुद्धघोष, सम्पादित एच. सी. नार्मन और एल.एस. तैलंग, भाग–1, पृ.193
16. धम्मपद, गाथा–संख्या 247
17. वही, गाथा – संख्या – 345
18. वही, गाथा–संख्या–53)
19. वही, गाथा – संख्या 55 तथा देखिए, गाथा – संख्या – 44, 45, 46, 56
20. वही, गाथा – संख्या – 145
21. द डायलाग्स ऑफ दि बुद्ध, जिल्द –1, पृ० –100
22. धम्मपद, गाथा – संख्या – 145
23. वही, गाथा – संख्या – 33
24. वही, गाथा–संख्या 240
25. वही, गाथा–संख्या– 239
26. वही, गाथा–संख्या 186
27. धम्मपद अट्ठकथा, बुद्धघोष, सम्पादित एच. सी. नार्मन और एल.एस. तैलंग, जिल्द 2, पृ. 207
28. अपसस वही, पृ. 207
29. धम्मपद, गाथा – संख्या – 108
30. वही, गाथा संख्या–109
31. मनुस्मृति, 2/121
32. धम्मपद, गाथा–संख्या 325
33. वही, गाथा–संख्या – 30
34. वही, गाथा–संख्या– 188–189
35. वही, गाथा – संख्या 126
36. अप वही, गाथा – संख्या – 15
37. वही, गाथा–संख्या 16

Copyright © 2015 *Dr.Alok Bhardwaj*. This is an open access refereed article distributed under the Creative Common Attribution License which permits unrestricted use, distribution and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.